❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 47, अंक 41 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 26 अगस्त, 2024 से रविवार 1 सितम्बर, 2024

विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125

दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8

वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150

ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

माननीय राष्ट्रपति जी की गहरी चिंताओं के मायने : प्रत्येक भारतीय के लिए अत्यंत विचारणीय

सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया, फिल्म इंडस्ट्री और सेंसर बोर्ड सहित सभी के लिए चिंतन करने की आवश्यकता

(पश्चिम बंगाल एवं विभिन्न राज्यों की अमानवीय घटनाओं से स्तब्ध और व्यथित राष्ट्रपति के सन्देश पर आधारित चिन्तन)

28 अगस्त 2024 बुधवार को भारत राष्ट्र की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी ने अपने विशेष लेख **"महिला सुरक्षा : बस बहुत हो चुका"** में लिखा कि छात्र, डॉक्टर और नागरिक कोलकाता में जब प्रदर्शन कर रहे हैं तो उसे समय भी अपराधी दूसरी जगह शिकार की तलाश में घात लगाए हुए हैं। पीड़ितों में छोटी-छोटी स्कूली बच्चियां तक शामिल है। उन्होंने लिखा कि महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों के लिए कुछ लोगों द्वारा महिलाओं को वस्तु के रूप में देखने की मानसिकता जिम्मेदार है। बेटियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी है कि हम उनके मुक्ति पाने के मार्ग में आने वाली बाधाओ को दूर करें। राष्ट्र के साथ मैं भी आक्रोशित हूं। 9 अगस्त को कोलकाता के आर.जी. कर अस्पताल में एक जूनियर डॉक्टर के साथ दुष्कर्म और उसकी हत्या का जिक्र करते हुए "स्तब्ध और व्यथित" राष्ट्रपति जी ने लिखा कि इससे भी अधिक निराशाजनक बात यह है कि यह महिलाओं के खिलाफ अपराधों की श्रृंखला का हिस्सा है। राष्ट्रपति ने लिखा कि कोई भी सभ्य समाज बेटियों और बहनों पर इस तरह के अत्याचार की अनुमति नहीं दे सकता। राष्ट्र का आक्रोषित होना निश्चित है और मैं भी अक्रोशित हूं।

माननीय राष्ट्रपति जी के इस लेख के पीछे के कारणों पर चिंतन करना आज हर भारतीय का और हर उस जिम्मेदार संस्था का दायित्व बनता है जो समाज को सही दिशा देने के लिए जिम्मेदार हैं, जितनी भी सोशल मीडिया पर विभिन्न माध्यमों से सामग्री परोसी जाती है अथवा जो कुछ भी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाता है या जितने भी फिल्म निर्माता या पूरी फिल्म इंडस्ट्री के साथ ही फिल्मों को पास करने वाला सेंसर बोर्ड है, क्या ये सब जिम्मेदार नहीं है? इस पर अगर गहराई से चिंतन करें तो समस्त संस्थानों की भारत सरकार को अवश्य जिम्मेदारी निश्चित करनी चाहिए।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने अब से डेढ़ सौ वर्ष पहले ही नारी के सम्मान, नारी की शिक्षा, नारी के उत्थान की पुरजोर वकालत की थी। किंतु उस समय तो देश पराधीन था, पर आज स्वतंत्र होने के बावजूद भी इस तरह की अमानवीय, निंदनीय और असहनीय पीड़ा देने वाली घटनाएं न केवल बंगाल बल्कि विभिन्न स्थानों पर कहीं न कहीं रोज घटित हो रही हैं। इसके लिए हमें जागना होगा, मानव मात्र को समझना होगा कि नारीशक्ति का देश की उन्नति-प्रगति में क्या महत्व है? उसके सम्मान और उसके गौरव की रक्षा करने का सभी को संकल्प लेना चाहिए। यही माननीय राष्ट्रपति जी का भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए, सरकारों के लिए और कानूनविदों के लिए संदेश है।

- सम्पादक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

प्रथम पुरस्कार :
1 लाख रुपये एवं विशेष उपहार

द्वितीय पुरस्कार :
51 हजार एवं विशेष उपहार (2)

तृतीय पुरस्कार :
31 हजार एवं विशेष उपहार (3)

चतुर्थ पुरस्कार :
5100/- एवं विशेष उपहार (25)

पांचवा पुरस्कार :
नकद 2100/- रुपये (100)

छठा पुरस्कार :
नकद 1000/- रुपये (250)

सातवां पुरस्कार :
नकद 500/- रुपये (250)

नियम व शर्तें -

1. इस प्रतियोगिता में अधिकतम 18 वर्ष तक की आयु के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। सभी प्रश्नोत्तर इसी कॉमिक पुस्तिका में हैं।

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

- शेष पृष्ठ 7 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक

रविवार 1 सितम्बर, 2024 सायं : 3:00 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक **रविवार 1 सितम्बर, 2024** को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में **सायं 3:00 बजे** से आयोजित की गई है। सभी माननीय सम्मानित अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्य मानुभावों को बैठक का ऐजेण्डा पत्रक व्हाट्सएप्प, टेलीग्राम एवं साधारण डाक से विधिवत् भेज दिया गया है। अत: सभी सम्मानीय सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य (प्रधान) विनय आर्य (महामन्त्री)

देववाणी-संस्कृत

करुणासागर ! द्वेष की ज्वाला बुझा दें

वेद-स्वाध्याय

प्राग्नये वाचमीरय वृषभाय क्षितीनाम्। स नः पर्षदति द्विषः।।

–ऋ० 10/187/1 ; अथर्व० 6/34/1

ऋषिः - वत्स अग्नय।। देवता- अग्निः।। छन्द- निचृद्गायत्री।।

शब्दार्थ - **क्षितीनाम्** = मनुष्यों के **वृषभाय** =अभीष्टों को बरसानेवाले **अग्नये**= अग्निस्वरूप प्रभु के लिए **वाचम्** = अपनी वाणी को **प्र ईरय** = प्रकृष्टता से प्रेरित कर। वह **नः**=हमें **द्विषः**=द्वेषों से **अति पर्षत्**=पार लगाएगा।

विनय - हे मनुष्य! क्या तू चाहता है कि अब तू द्वेष से पार हो जाए? क्या तू अपने मनुष्य भाइयों से द्वेष कर-करके और बदले में उनके द्वेष को पा-पाकर तंग आ चुका है? तूने अपने सुख में बाधक समझ न जाने कितनों से द्वेष किया है, पर जितना ही तूने उनसे द्वेष किया है- वैर का बदला वैर से दिया है- क्या उतना ही वह द्वेष बढ़ता नहीं गया है? ओह! इस बदले की, प्रतिद्वेष की प्रक्रिया से द्वेष इतना बढ़ता गया है कि तू आज अपने ही बनाये एक द्वेष-सागर में घिर गया है। यदि तू अब पूरा व्याकुल हो चुका है और चाहता है इस द्वेष-चक्र से पार हो जाए तो तू उठ और जगत् में व्यापक अपने उस अग्निदेव तक अपनी वाणी को पहुँचा, जो सब मनुष्यों की कामनाओं को पूरा करनेवाले है। अरे, वह तो 'वृषभ' है, हमपर करूणा करके अभीष्टों को बरसा रहा है। केवल उस तक अपनी आवाज पहुँचाने की देर है कि वह तेरी कामना पूरी कर देगा। यदि तेरी यह इच्छा हार्दिक है तो निश्चय ही तेरी प्रार्थना, तेरी पुकार, वेग से, प्रकृष्टता से वहाँ पहुँचेगी। यदि वाणी की प्रकृष्टता से प्रेरित करने का हममें सामर्थ्य हो तो प्रार्थना की वाणी उस अग्निदेव को पहुँचकर उससे क्या नहीं करा सकती, किस कामना की पूर्ति नही करा सकती! हमारी कामना को पूरा करने की सामर्थ्य उसी में है-केवल उसी में है। वही हमें द्वेष-सागर से पार करेगा। इसलिए तू अपने सुख में बाधक समझकर अब किसी से द्वेष न कर, किन्तु सुख के बरसाने वाले उस प्रभु के सम्मुख पहुँचते ही सब द्वेष समाप्त हो जाएगा।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

फिल्म इंडस्ट्री पर्दे के पीछे का असली सच क्या है?

मनुष्य सभ्यता के प्रारंभ से ही दिन में आँखों को चकाचौंध कर देने वाले सूर्य और रात में निरभ्र आकाश को अपनी मुलायम चांदनी से सुशोभित कर देने वाले चन्द्रमा तथा उसके साथ-साथ आकाश में असंख्य टिमटिमाते तारों एवं अन्य खगोलीय घटनाओं को देखकर रोमांचित और भयभीत होता रहा है। लेकिन बाद में विज्ञान ने बताया कि चाँद को कितना भी खुबसूरत समझें, असल में जितना दिखता है, उतना खूबसूरत नहीं है। ना ही सितारे टिमटिमाते हैं। ये ब्रह्माण्ड रहस्यों से भरा हुआ है। यहां जो दिखता है, उसे अगर वैसा ही मान लिया तो भयानक भूल हो सकती है। बस ऐसा ही कुछ हाल फिल्म इंडस्ट्री का भी है। दूर से दिखने वाली चमकदार चीज हकीकत में कितने घने अंधेरे समेटे हुए है। हीरो-हीरोइन जैसे फिल्मों में दिखते हैं, वैसे नहीं होते। इसका जीता-जागता सबूत बनकर सामने आई है, 232 पन्नों की वो रिपोर्ट, जिसने फिल्म इंडस्ट्री के चेहरे से चमक का नकाब नोचकर एक दागदार सूरत उजागर कर दी है।

पूरे पांच साल बाद जस्टिस हेमा कमेटी की रिपोर्ट में जो खुलासा हुआ, उसने हर किसी का बुरी तरह से दिमाग हिलाकर रख दिया है। इस रिपोर्ट ने सिनेमा की सिल्वर स्क्रीन के पीछे छुपी काली असलियत को दिखाकर इस बात को भी साबित कर दिया कि आप जो देखते हैं, उस पर आंख बंद करके कभी भरोसा न करें क्योंकि यहां जहर भी अमृत जैसा नज़र आता है।

हाल ही में जस्टिस हेमा कमेटी की रिपोर्ट में चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं। यह रिपोर्ट केरल सरकार ने अब तक दबाए रखी थी, अब इसका खुलासा हुआ है। दरअसल, पहले मामला समझ लीजिए। घटना 14 फरवरी 2017 की है, मलयालम फिल्मों की मशहूर अभिनेत्री अपनी कार से कोच्चि जा रही थी। तभी उन्हें अगवा कर लिया गया। उन्हीं की कार में यौन उत्पीड़न किया गया। यह अपहरण ब्लैकमेल करने के इरादे से किया गया था। वारदात की जानकारी जंगल में आग की तरह पूरे केरल में फैल गई । सिनेमा प्रेमी सड़कों पर आ गए। इसमें नामचीन एक्टर दिलीप समेत 10 लोगों के नाम सामने आए। जन आक्रोश से पुलिस दबाव में आ गई । देखते ही देखते छह आरोपी धर लिए गए। सबको जेल जाना पड़ा।

इस वारदात के बाद मलयालम सिनेमा इंडस्ट्री में महिला कलाकारों की सुरक्षा, काम की शर्तों आदि को लेकर आवाज उठने लगी। आंदोलन तेज होता जा रहा था। इस बीच समय तेजी से भाग रहा था। अंततः मजबूरी होकर सीएम ने वारदात के पांच महीने बाद जुलाई में केरल हाई कोर्ट की रिटायर्ड जस्टिस हेमा की अध्यक्षता में तीन सदस्यीय कमेटी गठित कर दी। कमेटी को जो टास्क दिया गया, उसमें फिल्म इंडस्ट्री में महिला कलाकारों, सहयोगियों और अन्य स्टाफ की सेवा शर्तें, काम के बदले समुचित मेहनताना, शूटिंग स्थल पर सुरक्षा की पर्याप्त सुविधाओं आदि को लेकर रिपोर्ट देना था।

इस कमेटी ने फिल्म इंडस्ट्री को मथ डाला। सैकड़ों की संख्या में महिला कलाकारों, टेक्नीशियन्स तथा अन्य से बातचीत की। जरूरी बयान रिकॉर्ड किए गए। फिल्म इंडस्ट्री के सभी स्याह चेहरों का खुलासा किया गया। कास्टिंग काउच से लेकर फिल्म के सेट पर शराब आदि पीने के प्रमाण पाए गए। इस रिपोर्ट के अनुसार मलयालम सिनेमा में महिलाओं के प्रति गलत नजरिया भी देखने को मिला। मलयालम इंडस्ट्री में कास्टिंग काउच सिड्रोम की भी इसमें पुष्टि की गई है। इसमें कहा गया है कि निर्देशक और निर्माता अक्सर महिलाओं के शोषण के लिए उन पर दबाव डालते हैं। जो महिलाएं इन निर्माता-निर्देशकों की शर्तों से सहमत हो जाती हैं, उन्हें कोड नाम दिया जाता। फिल्मों में भूमिका के लिए अपनी ईमानदारी के साथ समझौता करने वाली ऐसी कई महिलाओं के इसमें बयान सामने आए हैं।

ऐसे एक बार फिर एक शब्द निकलकर सामने आया कास्टिंग काउच, इसे ऐसे समझिए जो इंडस्ट्री में नाम और काम पाने की इतनी बेतहाशा चाहत रखती है कि एक बड़े, काबिल आदमी से 'ब्रेक' मिलने के नाम पर उसके साथ सोने को तैयार है। 'कॉम्प्रोमाइज़' किया जाता है। इसी शब्द को लेकर जस्टिस हेमा कमेटी की रिपोर्ट में लिखा है, "सनेमा में महिलाएं अक्सर काम पर अकेले जाने में असुरक्षित महसूस करती हैं। कई सबूत यह बताते हैं, कि रोजगार के अवसरों के लिए हमबिस्तर होने की डिमांड की जाती है, जो इसे अन्य प्रोफेशंस से अलग बनाती है। टीचिंग, मेडिसिन या इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में महिलाओं को इस तरह की स्थितियों का सामना नहीं करना पड़ता है। इन नौकरियों में आमतौर पर किसी का स्किल और इंटरव्यू ही पर्याप्त होता है। लेकिन, फिल्म इंडस्ट्री में कास्टिग काउच परेशान करने वाली हकीकत बनी हुई है।"

....."सिनेमा पुरुष प्रधान इंडस्ट्री है। यह लड़कों का एक विशेष क्लब है, जो देर रात तक घंटों बैठकर किसी फिल्म की स्क्रिप्ट या अन्य पहलुओं पर चर्चा करते हैं। कई मामलों में ये चर्चाएं शराब के नशे में होती हैं। बातचीत हमेशा सिर्फ फिल्म तक सीमित नहीं रहती। इन बातचीत में अश्लील जोक और यौन इशारे भी शामिल होते हैं।" रिपोर्ट में आगे लिखा है, "मलयालम मूवीज में चुप रहने की संस्कृति है, जो आंशिक रूप से इंडस्ट्री को कंट्रोल करने वाले पावर नेक्सस की वजह से उत्पन्न हुई डर की मनोविकृति है।"

रिपोर्ट में आगे लिखा है, "सिनेमा पुरुष प्रधान इंडस्ट्री है। यह लड़कों का एक विशेष क्लब है, जो देर रात तक घंटों बैठकर किसी फिल्म की स्क्रिप्ट या अन्य पहलुओं पर चर्चा करते हैं। कई मामलों में ये चर्चाएं शराब के नशे में होती हैं। बातचीत हमेशा सिर्फ फिल्म तक सीमित नहीं रहती। इन बातचीत में अश्लील जोक और यौन इशारे भी शामिल होते हैं।" इसी रिपोर्ट में आगे लिखा है, "मलयालम मूवीज में चुप रहने की संस्कृति है, जो आंशिक रूप से इंडस्ट्री को कंट्रोल करने वाले पावर नेक्सस की वजह से उत्पन्न हुई डर की मनोविकृति है।"

अक्सर हम कहानियाँ सुनते हैं, कि फलाना अभिनेता या अभिनेत्री घर से भागकर फिल्म इंडस्ट्री में पहुंचा, नाम और शोहरत कमाई और आज एक मुकाम हासिल किया। लेकिन वो कहानी कभी नहीं सुनाई जाती जिसमें काम के बदले कॉम्प्रोमाइज तक की बातें खुलेआम होती हैं। प्रोड्यूसर्स, डायरेक्टर्स और एक्टर्स सभी शामिल होते हैं। ये लोग ही तय करते हैं कि किसे फिल्म में काम देना चाहिए और किसे नहीं। इसमें कोई अभिनेत्री कुलजीत रंधावा मानसिक दबाव के कारण आत्महत्या कर लेती हैं कि दक्षिण भारत की लोकप्रिय अभिनेत्री सिल्क स्मिता की तरह डिप्रेशन और कमजोर आर्थिक स्थिति के चलते अपना जीवन समाप्त कर लेती है।

ऐसे में सवाल है कि नारीवाद पर मूवी बनाने वाला यह सिनेमा जगत खुद पर्दे के पीछे क्या कर रहा है? मलयालम एक्ट्रेस ने अपनी पहचान छिपाते हुए बताया है कि उसे एक ऐसे अभिनेता के साथ इंटीमेट सीन करने के लिए मजबूर किया गया जिसने उसे पहले ही शोषित किया है। उसे बार-बार सीन के लिए रिटेक देने पड़ रहे थे और उसे उसी व्यक्ति की पत्नी का रोल निभाना पड़ रहा है *- शेष पृष्ठ 7 पर*

आओ, लौट चलें वेदों की ओर

अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन।
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिषाथन।। ऋग्वेद 10/48/5

भावार्थ- मैं इंद्र हूं, समस्त ऐश्वर्यों का स्वामी हूं, मैं किसी से हारने वाला नहीं हूं, मैं मृत्यु से भी पराजित नहीं होता। (ईश्वर भक्त मृत्यु के भय से मुक्त होते हैं) इसलिए मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए तथा कल्याणकारी ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिए मुझसे (प्रभु से) कामना करो। हे मनुष्यो! मेरे प्रति (प्रभु के प्रति) मित्रभाव को कभी क्षीण मत होने दो।

वर्तमान में मनुष्य भौतिक उन्नति के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ता जा रहा है। किंतु वैदिक मूल्यों की सांस्कृतिक संपदा को कुछ इस तरह पीछे छोड़ते जा रहा है, जैसे रेल यात्रा के समय स्टेशन पीछे छूटते जाते हैं। उन्नति की अंतहीन दौड़ में वैदिक संदेशों को हमने पढ़ना-सुनना, अमल में लाना जैसे बिल्कुल छोड़ ही दिया है, जिसका परिणाम यह निकला कि आज इनसान वैभव के शिखर पर बैठकर भी अशांत है, बेचैन है, व्याकुल है। सारे साधन मनुष्य के पास हैं, लेकिन फिर भी इनसान खीझा हुआ, क्रोध में भरा हुआ, तनाव से तना हुआ, चिड़चिड़ा स्वभाव बनाए हुए पूरे ब्रह्मांड से असंतुष्ट नजर आता है। आज परिवार, समाज, देश तो क्या मनुष्य अपने स्वयं के गौरव की रक्षा भी नहीं कर पा रहा है। वह मारा-मारा फिर रहा है। इनसान भूल चुका है कि वह ईश्वर का अमृत पुत्र है, सबका पिता परमात्मा उसका भी पिता है, जो संसार का सबसे बड़ा राजा है और राजा के पुत्र में भी संसारिक राजा की भांति जीवन जीने की संभावना उसके गुण, कर्म और स्वभाव को अपनाने पर ही प्रबल होती है।

आजकल मनुष्य अपने कर्म की ताकत को नहीं तौलता, परमात्मा की न्याय व्यवस्था पर विश्वास नहीं करता, जो मनुष्य अपने आपको बहुत समझदार समझता है- पीड़ाओं के समय संयम से काम नहीं लेता, अपनी विवेक शक्ति का इस्तेमाल नहीं करता। दुनिया की तरफ देखता है कि कहीं से कोई फरिश्ता आएगा और मेरे दु:खों को दूर कर देगा। जबकि सबके अंदर दैवीय शक्तियां विद्यमान हैं, जरूरत है उन्हें जगाने की, जरूरत है अपने स्वरूप को पहचानने की और जरूरत है कल्याण के मार्ग पर स्वयं कदम बढ़ाने की। दुनिया का कोई हाथ किसी को आगे नहीं बढ़ाता, आगे बढ़ाती है उसकी अपनी मेहनत और वेदज्ञान के रूप में परमात्मा की प्रेरणा। इसलिए मानव मात्र को जागृत करते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने ये प्रमुख नारा दिया था, आओ, लौट चलें वेदों की ओर, वेदों की ज्ञानामृत से अपने आत्मस्वरूप को पहचानें और जीवन को गरिमा प्रदान करें।

ऋग्वेद के 10वें मंडल के 48 वें सूक्त का पांचवा मंत्र है-

अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन।

सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिषाथन।।

मंत्र का भावार्थ- मैं इंद्र हूं, समस्त ऐश्वर्यों का स्वामी हूं, मैं किसीसे हारने वाला नहीं हूं, मैं मृत्यु से भी पराजित नहीं होता। (ईश्वर भक्त मृत्यु के भय से मुक्त होते हैं) इसलिए मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए तथा कल्याणकारी ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिए मुझसे (प्रभु से) कामना करो। हे मनुष्यो! मेरे प्रति (प्रभु के प्रति) मित्रभाव को कभी क्षीण मत होने दो।

मंत्र का पहला चरण -**अहम् इन्द्रः न परा जिग्य** अर्थात् मैं इंद्र हूं, राजा हूं, किसी से हारने वाला नहीं हूं। वेद की यह घोषणा हम मानकर चलें कि हम किसी से पराजित नहीं हो सकते-न अपनी समस्याओं से, न बीमारियों से, न कष्ट-क्लेशों से, न भय दिखाने वाले तत्वों से, न निराशाओं से। अगर मनुष्य अपनी धारणा यह बना ले कि मुझे किसी से हारना नहीं है और उसी के अनुसार कार्य व्यवहार करे तो वह अपने क्षेत्र में विजय प्राप्त करता रहेगा। किंतु अगर किसी कारण से उसके भीतर निराशा का जन्म हो गया तो चाहे वह शरीर से कितना ही बलवान हो, धनवान हो, गुणवान हो, उसे भीतर तक हिलाकर रख देगी, उसकी सफलता को निराशा रोककर खड़ी हो जाएगी।

एक व्यक्ति हमेशा चारपाई पर ही लेटा रहता था, कभी उठता नहीं था। उसकी बीमारी का कुछ पता नहीं चल रहा था। बाद में पता चला कि उसकी बीमारी क्या थी? दरअसल एक बार वह आदमी कुएं पर पानी पी रहा था, तो उसे पानी पिलाने वाली बहनों ने मजाक में कह दिया कि तेरे पेट में छोटी-सी छिपकली चली गई, जबकि वह असल में एक छोटा सा पत्ता था, जो कुएं के पास खड़े पेड़ से गिरा था और उसके पेट में चला गया। उस आदमी के दिमाग में यह बात बैठ गई कि मेरे पेट में छिपकली चली गई, अब मैं ठीक होने वाला नहीं हूं। छः महीने तक वह व्यक्ति बिस्तर पर रहा और जब किसी से ठीक नहीं हुआ तो एक वैद्य ने, जिसकी गर्दन कांपती रहती थी, उस बीमार व्यक्ति का पूरा इतिहास सुना और सुनने के बाद कहा कि बेटा! अब तू ठीक हो जाएगा, क्योंकि अब छिपकली के निकलने का समय आ गया है। उसने उसकी बहन को बुलाया और कहा तू आज फिर उस कुएं पर जाकर इसे पानी पिला, शायद छिपकली निकल जाए। जैसे ही वह व्यक्ति अंजलि बनाकर पानी पीने बैठा तो पीछे से वैद्यजी ने जोर का थप्पड़ लगाया और कहा कि देखो, वह निकली छिपकली। कितनी बड़ी होकर निकली है। अगले दिन से वह आदमी धीरे-धीर ठीक होने लगा। महीने भर बाद देखा कि वह आदमी खूब तेजी से दौड़ रहा है। न किसी ने छिपकली पेट में जाते देखी, न बाहर आते। मनुष्य का मन ऐसा है कि यदि कोई बात इसमें बैठ गयी तो वह असंभव को भी संभव बना लेता है।

एक बार किसी व्यक्ति को निराश कर दीजिए फिर वह कुछ करने योग्य नहीं रह जाएगा। किसी स्वस्थ व्यक्ति के दिमाग में यह बात भर दीजिए कि वह बीमार है और फिर अच्छे-से-अच्छा डॉक्टर भी उसका इलाज नहीं कर पाएगा। भय का भूत मनुष्य अपने भीतर खुद जगाता है। निराशा की राक्षसी को आप अपने अंदर खुद पैदा करते हैं। चिंता की डायन कहीं और से नहीं आती, आपके अंदर से ही पैदा होती है। इसीलिए मंत्र का संदेश सुनिए, पढ़िए और उसे अमन में ले आइए, स्वयं से कहिए कि मैं साधरण नहीं हूं, असाधरण हूं। मैं राजा हूं, मैं किसी से हार नहीं सकता। यह मानकर चलिए कि भगवान् ने आपको अपने अंश के रूप में बनाया है और आप स्वयं अपने स्वामी हैं।

जब तक मनुष्य अपने स्वरूप को नहीं समझता तब तक वह डर-डर कर जीता है, डरना ही जीवन की सबसे बड़ी हार है, जीवन में निर्भय होकर ही आप जीत सकते हैं। वैसे यह द्वंद्वों का संसार है, यहां सर्वत्रा भय व्याप्त हैं। लेकिन भय इंसान की शक्ति भी है और शक्ति का हरण करने वाला भी है। वकील, पुलिस, डॉक्टर, ज्योतिषी आपके भय को आपके अंदर जवान बनाए रखते हैं और स्वयं उस भय का लाभ उठाते हैं, कमाई करते हैं। भय एक मानवीय कमजोरी है-सौंदर्य को बुढ़ापे का भय है, धनी को निर्धनता का भय है, बलशाली को निर्बलता का भय है- तलब डर कहीं-न-कहीं, किसी- न-किसी रूप में सर्वत्रा व्याप्त है। भय से बच पाना बहुत कठिन है।

आप यदि भय से मुक्ति चाहते हैं तो सबसे पहले यह मानना चाहिए कि आप एक आत्मा हैं, जो नित्य है, अविनाशी है। मंत्र का अगला भाग है- **न मृत्यवे अवतस्थे कदाचन।** मंत्र के इस भाग में कहा गया है कि मैं मृत्यु से भी पराजित नहीं होता। इसका मतलब है कि जो राजा होने का भाव है, वह मनुष्य की आत्मा के लिए ही संबोधन है, शरीर के लिए नहीं, शरीर तो बनता रहता है, मिटता रहता है। लेकिन आत्मतत्व कभी मिटता नहीं। शरीर मिट जाएगा तब भी आप रहेंगे, मरकर भी आप मरेंगे नहीं, यह सोच मृत्यु जैसे भय को भगा सकती है।

दूसरी बात, यदि भय की आंखों में झांकेंगे तो भय भागेगा। जितना आप डरते हैं उतनी ही भय की शक्ति बढ़ती है। लेकिन जब आप हिम्मत और साहस से आगे बढ़ते हैं तो भय पीछे हटता है और आपके अंदर शौर्य जागृत होता है, वीरता आती है। आपको मन से, आत्मा से संकल्प लेना होगा कि आप केवल भय से लड़ ही नहीं सकते, बल्कि उसे मार भगा सकते हो, ऐसा करने के साथ ही आप में निर्भय होकर विचरण करने की क्षमता आ जाएगी।

अज्ञान से भय उपजता है और ज्ञान आपको निर्भयता प्रदान करता है। इसीलिए, ईश्वर की भक्ति और सद्गुरु का आशीर्वाद भी आपको निर्भयता प्रदान करते हैं। सीधा-सा उदाहरण है यदि आपको धन कमाने की विधि का ज्ञान प्राप्त हो जाए तो आप निर्धनता से भयभीत नहीं होंगे। यदि आपको जीवन के वास्तविक अर्थ का ज्ञान हो जाए तो आप मृत्यु से कभी भय नहीं मानेंगे। ज्ञान डर को समाप्त कर देता है, इसीलिए ज्ञानी निर्भय होकर विचरण करते हैं।

आगे मंत्र में कहा गया है-

सोम मा सुन्वन्तः याचता।। मंत्र के इस चरण का भाव है कि मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए और कल्याणकारी ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिए भगवान् से याचना करें। संसार में सबसे बड़ा दाता वही है, सब उसीसे प्राप्त करके सुख संपदा के मालिक बने हैं। लेकिन एक इनसान दूसरे के सामने हाथ फैलाता है, दीन-हीन बनकर याचना करता है। वैसे मनुष्य सामाजिक प्राणी है, यहां सबको एक दूसरे से काम पड़ता है, लेकिन मनुष्य स्वार्थ के अधीन होकर जब कहीं अनावश्यक हाथ जोड़ता है, पैर पकड़ता है, कहीं बाहें फैलाता है, चापलूसी करता है, निंदा-चुगली करता है, तो सच में वह अपने गौरव से अनजान होता है। देनेवाला इंसान भी यह नहीं समझता कि जिस दाता की देन पाकर यह स्वयं दाता बना हुआ है, मांगने वाले को अपने दर पर मांगने के लिए मजबूर करना अच्छी बात नहीं है, वह सबसे बड़ा दाता भगवान् जितना दाता का है, उतना याचक भी है।

एक बार कोई जरूरतमंद व्यक्ति किसी राजा के पास कुछ मांगने के लिए गया। जैसे ही वह राजा के पास पहुंचा तो उसने देखा कि राजा दोनों हाथ कभी जोड़ता है, तो कभी फैलाता है और कभी आसमान की तरफ देखता है तो कभी धरती को प्रणाम करता है। उस याचक को लगा कि यह राजा तो अजीब-अजीब हरकतें कर रहा है, यह मुझे क्या दे सकता है, इसका तो दिमाग भी संतुलित नहीं लगता। यह सोचते-विचारते वह वहीं पर खड़ा हुआ सब ध्यान से देखता रहा।

थोड़ी देर के बाद जब राजा अपनी पूजा-प्रार्थना समाप्त करके आया तो उसने पूछा कि बताइए आपको क्या चाहिए, क्या जरूरत है? उस साधरण व्यक्ति ने राजा को प्रणाम करते हुए सरलता से प्रश्न किया कि आप पहले यह बताएं कि आप इतनी देर से क्या कर रहे थे। राजा ने कहा मैं भगवान् से प्रार्थना कर रहा था, उस व्यक्ति ने फिर पूछा कि प्रार्थना क्या होती है, इसमें क्या करते हैं, इसको करने से क्या मिलता है। राजा ने कहा-मैं भगवान् से बल-बुद्धि, धन, साम्राज्य और अपनी प्रजा के लिए सुख-शांति मांग रहा था। उस प्रभु की प्रार्थना से सब मनोरथ पूर्ण होते हैं। लेकिन तुम बताओ कि तुम्हें क्या चाहिए, उस साधरण से इनसान ने कहा कि जब आप राजा होकर भी संसार के सबसे बड़े राजा से मांगते हैं, तो फिर मैं क्यों आपसे मांगू, मैं भी उस विधाता से ही मांगूगा, जिससे मांगकर आप राजा बने हैं। इसलिए इनसान दूसरे इनसान का सम्मान तो करे लेकिन अगर कुछ मांगना है, तो भगवान् से मांगे।

मंत्र में आगे कहा गया है '**न मे पूरवः सख्ये रिषाथन** जिसका अर्थ है कि परमात्मा अपने पुत्र मनुष्य को संबोधित करते हुए कह रहे हैं कि मेरे (ईश्वर) के प्रति मित्र भाव को कभी समाप्त मत होने देना। मनुष्य के जीवन में एक जैसी स्थिति कभी नहीं रहती, जीवन में उतार-चढ़ाव आता ही आता है, लेकिन भगवान् को हर हाल में, हर काल में एक जैसे भाव में सर्वदा अपने अंग-संग अनुभव करना चाहिए।

- आचार्य अनिल शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती : हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा
सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय एवं तृतीय समुल्लास पर सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य का विशिष्ट व्याख्यान

शिक्षा का सही अर्थ है - राष्ट्र सेवा और मानव निर्माण में सहयोगी बनना

21 अगस्त 2024 को हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय एवं तृतीय सम्मुल्लास पर विशिष्ट व्याख्यान देते हुए दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने अपनी सरल सहज शैली में महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रेरक जीवन, उपकार और शिक्षाओं का प्रमाणिक संदर्भ देते हुए उपस्थित विधार्थियों के समूह को सत्यार्थ प्रकाश पर प्रेरक व्याख्यान दिया। आपने बताया कि महर्षि दयानंद जी ने सत्यार्थ प्रकाश को 14 समुल्लासो में विभाजित किया, इससे पूर्व और बाद में किसी भी ग्रंथ में ये शब्द प्राप्त नहीं होता, समुल्लास शब्द का अर्थ है- अध्याय, चैप्टर। महर्षि ने उस समय की विषम परिस्थितियों को दिखा और संपूर्ण व्यवस्था को देखकर अनुभव करके अपने वाणी और लखनी से मानव समाज को दिशा देने के लिए सत्यार्थ प्रकाश की रचना की। इस ग्रंथ को पढ़कर आप समझ सकते हैं कि महर्षि क्या सोचते थे, महर्षि क्या कहना चाहते थे और महर्षि क्या करना चाहते थे? वस्तुत: महर्षि ने उस समय की स्थिति को करीब से देखा और सोचा कि क्या यह वही भारत है, जहां पूरे विश्व के लोग शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे, क्या यह वही भारत है जिसे विश्व गुरु कहा जाता था? ऐसा कौन सा कारण हुआ कि हम पराधीन हो गए, ऐसी कौन सी वजह थी की सोने की चिड़िया कहा जाने वाला देश गरीब हो गया? तो इसके पीछे उन्होंने पाया कि हमारे यहां पर शिक्षा के स्तर का कमजोर होना इसका सबसे बड़ा कारण है। महर्षि ने नारी शिक्षा का अभियान चलाया और आधुनिक युग में भी अगर देखें तो जालंधर के अंदर महर्षि द्वारा स्थापित कन्या विद्यालय एक बड़े स्तर पर गतिशील है। उस समय सभी लोगों ने नारी शिक्षा का भारी विरोध किया था, लेकिन महर्षि दयानंद संकल्प के धनी थे, उन्होंने पूरे प्रमाणित तरीके से महिलाओं को शिक्षा का अधिकार दिलाया, जब हम अपने वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को भूल चुके थे तब उन्होंने हमें वेदों को पढ़ना-पढ़ना और सुनने सुनाने का संदेश दिया। मुगलों और अंग्रेजों के परस्पर युद्ध में, उनकी योजनाओं का शिकार होकर जो सैनिक लड रहे थे, वह कौन थे? अगर गहराई से विचार करेंगे तो वे सब भारतीय थे, अज्ञानता के कारण हम अपनी गरिमा को, अपने स्वरूप को और अपनी शक्ति को भूल चुके थे। महर्षि दयानंद सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश की रचना करके एक अद्भुत क्रांति का बिगुल बजाया और बताया कि भारत ही वह भूमि है जहां से संपूर्ण विश्व को शिक्षा और संस्कार प्रदान किए जाते थे, अत: उन्होंने अपने स्वरूप को पहचानने के लिए

महर्षि दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश के पहले समुल्लास में ईश्वर क्या है, ईश्वर कैसा है और कहां पर रहता है, क्या करता है और ईश्वर के नामो की चर्चा की है। दूसरे समुल्लास में महर्षि ने मनुष्य के जन्म से पहले की तैयारी को लेकर वैज्ञानिक संदेश दिया कि किस तरह से संतान उत्पत्ति के लिए मनुष्य को प्रयत्न करना चाहिए। इस विषय पर विनय आर्य जी ने गृह निर्माण का उदाहरण देते हुए कहा कि जब कोई मकान बनाता है तो पहले आर्किटेक्ट से संपर्क करता है, नक्शा बनता है, वेंटीलेशन का भी ध्यान रखना है और सारी चीजों को सोच विचार कर तब निर्माण करता है, तो इसी तरह से महर्षि ने मनुष्य निर्माण की जो योजना है उस पर गहराई से चिंतन प्रस्तुत किया।

नारी की शिक्षा को बहुत महत्व दिया।

महर्षि दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश के पहले समुल्लास में ईश्वर क्या है, ईश्वर कैसा है और कहां पर रहता है, क्या करता है और ईश्वर के नामो की चर्चा की है। दूसरे समुल्लास में महर्षि ने मनुष्य के जन्म से पहले की तैयारी को लेकर वैज्ञानिक संदेश दिया कि किस तरह से संतान उत्पत्ति के लिए मनुष्य को प्रयत्न करना चाहिए। इस विषय पर विनय आर्य जी ने गृह निर्माण का उदाहरण देते हुए कहा कि जब कोई मकान बनाता है तो पहले आर्किटेक्ट से संपर्क करता है, नक्शा बनता है, वेंटीलेशन का भी ध्यान रखना है और सारी चीजों को सोच विचार कर तब निर्माण करता है, तो इसी तरह से महर्षि ने मनुष्य निर्माण की जो योजना है उस पर गहराई से चिंतन प्रस्तुत किया। क्योंकि बच्चे ही तो आगे का भविष्य है, बच्चों से ही तो संसार गतिशील रहेगा, इसलिए मनुष्य का निर्माण किस तरह से होना चाहिए? कैसे शारीरिक, मानसिक, आत्मिक रूप से बच्चे सबल होंगे इस पर महर्षि ने दूसरे अध्याय में चर्चा की। महर्षि ने इस विषय में माता-पिता का किस तरह का खान-पान हो? कैसे आचार विचार हो और किस तरह प्रेम प्रसन्नता के वातावरण में संतान का निर्माण किया जाए, इसको विस्तार से बताया। इसके बाद जब जन्म हो जाए तो फिर कैसे बच्चे को संस्कार दें, किस तरह से उसके जन्मपत्री बनवाएं या न बनवाएं? जन्मपत्री को महर्षि ने शोकपत्री कहं है ,क्योंकि इसके कारण है कि जब बच्चे का जन्म होता है तो घर में आनंद छा जाता है और जब पंडित से जन्मपत्री बनवाते हैं तो फिर वह कहता है कि यह बच्चा तो किसी ग्रह का दोष होने के कारण कुछ समय के बाद चला जाएगा, तो फिर घर में शोक छा जाता हैं इसलिए महर्षि ने जन्मपत्री का निषेध किया। महर्षि दयानन्द ने पहला गुरु माता-पिता को कहते हुए अक्षर ज्ञान करने की जिम्मेदारी दी, फिर उसको आगे बढ़ते हुए 8 वर्ष की अवस्था में यज्ञोपवीत संस्कार के साथ गुरु के शरण में यानी गुरुकुल में भेजने का निर्देश किया, वहां पर या जो पवित्र संस्कार की बात भी कही और समय-समय पर बच्चों की प्रताड़ना का भी निर्देश किया, जिससे मानव निर्माण को गति दी जा सके प्रताड़ना का मतलब यही था कि जैसे कुम्हार घड़े का निर्माण करता है तो ऊपर से थपकी देता है और अंदर से सहारा देता है, तो इस तरह से मानव निर्माण के लिए महर्षि दयानंद का संदेश हमें प्राप्त होता है। लेकिन यह सब कल्पना उस समय की बहुत बड़ी आवश्यकता थी। महर्षि ने समाज को नमस्ते का अभिवादन दिया, क्योंकि उसे समय अलग-अलग तरीके से अभिवादन करने की परंपरा प्रारंभ हो गई थी। आज नमस्ते का अभिवादन पूरे विश्व में भारत की पहचान है, इसी क्रम में महर्षि ने ब्रह्मचर्य को बहुत महत्व दिया क्योंकि जब व्यक्ति शरीर से स्वस्थ होगा तो फिर उसके भीतर स्वस्थ ही मन मस्तिष्क काम करेंगे। महर्षि ने सबसे बड़ी जो बात कही उन्होंने कहा कि प्रत्येक मनुष्य को शिक्षा का अधिकार है, समान शिक्षा का अधिकार है और शिक्षा को अनिवार्य कहते हुए उन्होंने कहा, कि जो अपने बच्चों को शिक्षा के लिए ना भेजें उन्हें दंड का अधिकारी समझना चाहिए, उन्होंने निशुल्क शिक्षा की बात की चाहे राजा का बेटा हो या निर्धन का बेटा हो सभी समतुल्य स्थान और स्थिति में शिक्षा ग्रहण करें वर्तमान में जो संघर्ष दिखाई देता है, कि जो धनवान है उनका बच्चा 100000 महीना की फीस देकर के पढ़ रहा है, बड़े से बड़े स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और जो गरीब के बच्चे हैं वह सरकारी स्कूल में तो इस भेद को मिटाने के लिए उन्होंने एक समान शिक्षा की बात कही।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा के अनुरूप ही आर्य समाज 10000 संस्थाओं के साथ एक बहुत बड़ा संगठन है, जिसमें अनेक विद्यालय, स्कूल, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, महाविद्यालय, विश्व विद्यालय शिक्षा के लिए अपना योगदान दे रहे हैं, यह हंसराज कॉलेज जो भूमिका निभा रहा है, यह भी उसी का एक भाग है महर्षि दयानंद ने गुरुकुल शिक्षा की परंपरा को जो काम दिया जो पाठ्यक्रम और पठन-पाठन की विधि बताई, उसमें उन्होंने मनुष्य को विद्वान बनाकर मानव समाज के निर्माण और कल्याण में अहम भूमिका निभाने का निर्देश किया है, शिक्षा का अर्थ उन्होंने समझते हुए कहा कि पहले अक्षर ज्ञान फिर गुरु के पास जाकर के अष्टाध्यायी, फिर दर्शन, उपनिषद और अष्टांग योग को पढ़कर व्यक्ति अपना स्वयं का और समाज का कल्याण करने के लिए प्रयास करें, उन्होंने प्राणायाम को बहुत महत्व दिया। जो व्यक्ति प्राणायाम करेगा वह स्वस्थ रहेगा, लेकिन उन्होंने शिक्षा में अष्टांग योग को भी बहुत महत्व दिया है। नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि योग जो 8 यम-नियम हैं इसमें उन्होंने इन बहुत बोल दिया क्योंकि यही मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाते हैं, आजकल हम केवल आसन को लेकर के ही योग समझते हैं जबकि यह तो अष्टांग योग में तीसरा चरण है।

तो जब हम योग को अपनाएंगे तभी हमारा समुचित विकास होगा, ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे, तो हमारे जीवन की नींव मजबूत होगी, इस तरह से महर्षि दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे और तीसरे समुल्लास में जो पढ़ने-पढ़ाने का हमें निर्देश दिया। वह पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है और कल्याणकारी है, उन्होंने मनुष्य को किस तरह से गुरु के प्रति माता-पिता के प्रति और समाज के प्रति व्यवहार करना चाहिए, इसका भी संदेश दिया। सभा में कहां पर बैठना चाहिए और किस स्थिति में कैसे हमें अपने आप को शोभायमान करना चाहिए, यह सब उन्होंने हमें बताया है, महर्षि दयानंद ने माता-पिता की, गुरु आचार्य की, स्वयं विद्यार्थी की समस्त जिम्मेदारियों को बड़ी गहराई से हमें बताया है। माता-पिता के प्रति उन्होंने कहा कि अपने बच्चों पर नजर रखें, आचार्य/टीचर्स भी अपने बच्चों पर पूरा ध्यान दें, कहां पर जा रहे हैं, क्या कर रहे हैं, किस तरह का व्यवहार कर रहे हैं, यह सब जानकारी महर्षि दयानंद ने पूरी तरह से और यह प्रमाणित तरीके से लिखी है और यह उनकी अपनी नहीं है, सब वेदोक्त है, वेदों के अनुसार है। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर इतनी बड़ी क्रांति का जन्म हुआ, लाखों लोग कल्याण के पथ पर अग्रसर हो गए, यह एक कालजयी ग्रंथ है क्रांतिकारी ग्रंथ है, इसको सबको पढ़ना चाहिए और इसके लिए आर्य समाज के द्वारा अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू ऑडियो-वीडियो और अनेक तरह से लगभग 19 भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश उपलब्ध है। सत्यार्थ प्रकाश का ही प्रभाव था, कि एक क्रिश्चयन जिसका नाम था ईवान सैमुअल स्टॉक्स जो भारत में

- *जारी पृष्ठ 7 पर*

आर्य समाज के स्वास्थ्य जागरुकता अभियान से निर्धन लोगों को निरंतर हो रहा है स्वास्थ्य लाभ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत विभिन्न बस्तियों में स्वास्थ्य जागरूकता सेवा शिविर संपन्न

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की नियंत्रक शिरोमणि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा राष्ट्र सेवा एवं मानव निर्माण के सैकड़ों प्रकल्प गतिशील हैं। सभा द्वारा संचालित सेवा समर्पण के इस अनुक्रम में स्वास्थ्य जागरुकता सेवा से प्रतिदिन सैकड़ों गरीब लोग लाभ प्राप्त कर रहे हैं। इस महत्वपूर्ण योजना का उद्देश्य है, कि दिल्ली की उन समस्त सेवा बस्तियों में जहां निर्धन, मजदूर लोग रहते हैं, जहां पर छोटे-छोटे झुग्गी झोपड़ी हैं, साफ सफाई भी नाम मात्र के लिए ही है, वहाँ इस बरसात और उमस भरी गर्मी के मौसम में सभा की एंबुलेंस और पूरी स्वास्थ्य जागरुकता सेवा की टीम दिल्ली में जगह-जगह झुग्गी बस्तियों में निशुल्क स्वास्थ्य जांच कर रही है, जिसमें सुगर, वी पी, हीमोग्लोबिन, ऑक्सीजन, प्लस, वजन, लम्बाई की जांच कर तुरंत रिपोर्ट दी जाती है।

वस्तुतः आधुनिक परिवेश में उत्तम स्वास्थ्य अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। उस पर भी भारत की राजधानी दिल्ली का प्रदूषित वातावरण, झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले निर्धन मजदूरों जो रोज कमाते और खाते हैं, जहां हवा, पानी, भोजन आदि सब बहुत कम स्वच्छ होता है। ऐसे में वहां पर बीमार लोग अपनी दिहाड़ी मजदूरी से छुट्टी न मिलने के कारण बिना स्वास्थ्य परीक्षण के लक्षणों के आधार पर दवा खाकर ज्यादा बीमार हो जाते हैं। इन सभी समस्याओं और पीड़ाओं को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली की समस्त सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य जागरुकता सेवा अभिमान के माध्यम से सभा की एम्बुलेंस और स्वास्थ्य जागरुकता की पूरी टीम जगह-जगह स्वास्थ्य परीक्षण का कार्य कर रही है। जिससे निर्धन रोगियों की बीमारी की सही जांच और उपचार संभव हो सके। इस सेवा कार्य में सभा को लगातार सफलता मिल रही है।

इस सेवा अभियान से निर्धन लोगों को लगातार राहत मिल रही है, लोग आर्य समाज के सेवा कार्यों की सराहना कर रहे हैं, महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के प्रति आभार व्यक्त कर रहे हैं। **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया** की भावना साकार हो रही है।

यहां प्रस्तुत है अगस्त 2024 के दौरान दिल्ली की विभिन्न सेवा बस्तियों हनुमान मंदिर, झुग्गी बस्ती, मॉडल टाउन, सिगरेट वाला बाग, भामाशाह रोड, बाल्मीकि बस्ती, आईटीओ आदि स्थानो पर लगे स्वास्थ्य जागरुकता शिविर की झलकियां।

विशेष नोट : यदि आप भी आपने क्षेत्र में स्वास्थ जागरूकता कैम्प आयोजित कराना चाहते हैं तो प्रकल्प के संयोजक से **9990232164** पर सम्पर्क करें।

– ***संयोजक***

आचार्या सुमेधा जी "प्राच्यविद्याभूषण" सम्मान से सम्मानित आर्य जगत की ओर से बधाई

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है की 22 अगस्त 2024 को श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली एवं राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, तीनों विश्वविद्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में "उत्कर्ष महोत्सव" में केंद्रीय मंत्री श्री गिरिराज सिंह जी, तीनों विश्वविद्यालयों के कुलपति तथा पदमश्री चमु कृष्ण शास्त्री जी द्वारा आर्य समाज की विदुषी आचार्या सुमेधा जी को प्राच्यविद्या सम्मान से सम्मानित किया गया। उपरोक्त कार्यक्रम 12 अन्य संस्कृत विश्वविद्यालयों के कुलपति, अनेक अन्य संस्कृत प्रेमी महानुभावों, संस्कृत भारती के अखिल भारतीय संगठन के मंत्री श्री दिनेश कामत जी इत्यादि की उपस्थिति में भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद बसंत कुंज नई दिल्ली के सभागार में संपन्न हुआ। आचार्या सुमेधा जी की इस उपलब्धि के लिए समस्त आर्य जगत गौरवान्वित है और उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता है।

आर्यसमाज हनुमान रोड द्वारा वेद प्रचार समारोह सम्पन्न

श्रावणी पर्व के अवसर पर आर्य समाज 15 हनुमान रोड द्वारा 19 से 26 अगस्त 2024 तक वेद प्रचार समारोह उमंग उत्साह के वातावरण में संपन्न हुआ। 19 अगस्त को श्रावणी पूर्णिमा रक्षाबंधन के अवसर पर विशेष यज्ञ एवं यज्ञोपवीत संस्कार का आयोजन किया गया। जिसमें आर्य समाज के अधिकारियों ने नए यज्ञोवपीत धारण किए और श्रावणी के विशेष महत्व पर आधारित प्रवचन एवं भजनों का आनन्द लिया। 23 से 26 अगस्त 2024 को प्रतिदिन प्रात 8:00 से 9:30 बजे तक चतुर्वेद शतकम परायण यज्ञ तथा सायं काल 7 से 9:00 तक भजन एवं प्रवचनों का कार्यक्रम चलता रहा। यज्ञ के ब्रह्मा डॉक्टर हरिदेव शास्त्री जी ने वेदों के महत्व को समझाते हुए जीवन में वेदों की उपयोगिता को आधार बनाकर अत्यंत प्रेरक और सारंगभित मानव उपयोगी प्रवचन देकर सबको कृतार्थ किया। भजनोपदेशक श्री विनोद आर्य जी ने अत्यंत मनोहारी और प्रेरक भजनों का गायन करके

– शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

दिल्ली-दरबार में और पंजाब की ओर

गतांक से आगे-

1 जनवरी 1877 ई॰ को दिल्ली में महारानी विक्टोरिया के भारत की महारानी उद्घोषित होने के उपलक्ष्य में भारी दरबार होने को था। उसकी तैयारियां धूमधाम से हो रही थीं। दिल्ली में देशभर के राजे-महाराजों के आने की आशा लग रही थी। महर्षि दयानन्द जी बम्बई से लौटकर संयुक्त प्रान्त में भ्रमण कर रहे थे; उन्हें दरबार के समाचार मिले। जो व्यक्ति संसारभर को सत्य की बात सुनाने का बीड़ा उठाए हुए हो, उसे इससे अच्छा अवसर कहां हाथ आ सकता था! महर्षि जी के लिए मुख्यत: दो प्रलोभन थे। एक तो उनकी प्रबल इच्छा थी कि वह आर्यावर्त के राजाओं के हृदय में सच्चे आर्य धर्म के लिए प्रेम पैदा करने में सफल हों। उनकी भावना थी कि जब तक देश के रईस नहीं सुधरते, तब तक प्रजा का सुधार नहीं हो सकता। यदि किसी प्रकार रईसों की दशा सुधारी जा सके तो सर्वसाधारण की दशा में बिना विशेष परिश्रम के ही परिवर्तन किया जा सकता है। इस कारण उनकी अभिलाषा थी कि किसी प्रकार देशभर के नरेशों के कानों तक सत्य का सन्देश पहुंचाया जाय। दरबार की ओर खींचने वाला दूसरा प्रलोभन यह था कि महर्षि जी देश में कार्य करने वाली अनेक शक्तियों को देख रहे थे। एक ओर ब्राह्मोसमाज था, जिसकी बागडोर उस समय बाबू केशवचन्द्र के हाथ में थी। दूसरी ओर सर सय्यद अहमद की चलाई हुई लहर थी, जिसका उद्देश्य मुसलमानों को जगाना था। शक्तियां अनेक थीं, परन्तु सबका उद्देश्य एक ही दिखाई देता था। एक ही सचाई का भिन्न-भिन्न रूप से प्रकाश हो रहा था। महर्षि जी की प्रतिभा केवल भेदों को देखने वाली और काट-छांट करने वाली न थी, वह बड़े-से-बड़े भेद में समानता देखने की शक्ति रखती थी। महर्षि जी भेद-प्रवृत्ति को ही उत्पन्न नहीं करना चाहते थे, बुराइयों के दूर हो जाने पर बची हुई भलाई के आधार पर सारी मनुष्य जाति को एकता के सूत्र में पिरो देने का भी संकल्प रखते थे। 'सत्यार्थ प्रकाश' का निम्नलिखित उद्धरण महर्षि जी के आशय को प्रकट करेगा-

''(जिज्ञासु) इसकी परीक्षा कैसे हो?''

(आप्त) तू जाकर इन-इन बातों को पूछ, सबकी एक सम्मति हो जाएगी। तब वह उन सहस्रों की मण्डली के बीच में खड़ा होकर बोला कि 'सुनो सब लोगो! सत्य भाषण में धर्म है वा मिथ्या में?' सब एकस्वर होकर बोले कि 'सत्य-भाषण में धर्म और असत्य-भाषण में अधर्म है।' वैसे ही विद्या पढ़ने, ब्रह्मचर्य करने, पूर्ण युवावस्था में विवाह, सत्संग, पुरुषार्थ, सत्य व्यवहार आदि में? सबने एकमत होकर कहा कि 'विद्यादि के ग्रहण में धर्म और अविद्यादि के ग्रहण में अधर्म।' तब जिज्ञासु ने सबसे कहा कि 'तुम इसी प्रकार सब जने एकमत हो सत्यधर्म की उन्नति और मिथ्या मार्ग की हानि क्यों नहीं करते हो?'

इससे स्पष्ट है कि महर्षि जी केवल मत-मतान्तरों के भेद को दिखाकर विरोधात्मक संसार की रचना करने वाले नहीं थे। उनका संकल्प था कि सर्वसम्मत व्यापक सच्चाइयों के आधर पर संसारभर का एक धर्म स्थापित किया जाय। दिल्ली के दरबार में भारतवर्ष के सब धार्मिक सुधारकों के इकट्ठे होने की आशा थी। महर्षि जी को यह अवसर बहुत उत्तम प्रतीत हुआ। जो लोग महर्षि जी को संकुचित सम्प्रदाय के संस्थापक के रूप में प्रकट करना चाहते हैं, वे यदि इस उद्धरण और ऋषि जीवन के इस भाग को ध्यान से पढ़ेंगे तो उनका सन्देह दूर हो जाएगा। दिसम्बर मास के अन्त में महर्षि दयानन्द जी दिल्ली पहुंच गए, और शेरमल के अनारबाग में डेरा जमाया। मुन्शी इन्द्रमणि आदि हितैषी लोग महर्षि जी के साथ ही ठहरे थे। इन दिनों महर्षि जी 'ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका' पूर्ण कर

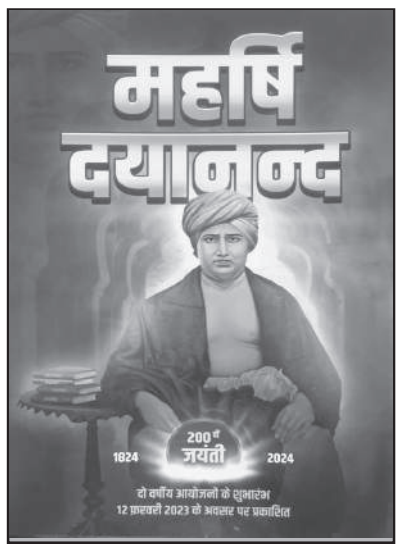

चुके थे और वेद भाष्य लिखते थे। प्रचार का कार्य प्रतिदिन होता था। राजा-महाराजाओं के पण्डित, महर्षि जी के पास आते रहते थे। महर्षि जी ने अपने विचारों की सूचना प्राय: सब राजाओं के पास भेज दी थी। उन लोगों के हृदय में भी महात्मा के दर्शनों की इच्छा उत्पन्न होती थी।

-क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

In Delhi-Durbar and towards Punjab

"(Jigyaasu) How to test it?"

(Aapt) You go and ask these matters, everyone will agree. Then in the midst about all of the gathering of those thousands, he listen! Is there dharam in true speech or in falsehood? Everyone said with one voice that 'there is dharam in truthful speech and unrighteousness in false speech. In the same way, getting education, practising celibacy, marriage in full youth, satsang, purusharth, truthful behavior etc. Vidyaadi, religion and unrighteousness is in the eclipse of Avidyaadi. Then the inquisitor said to everyone" this is how you all agree, why don't you the progress of the true religion and the harm of the false path?"

It is clear from this that Maharishiji was not the one to create an opposing world only by showing the difference between the opinion-mutants. His resolve was to establish a universal religion based on universal truths. All the religious reformers of India were expected to assemble in the court of Delhi. Maharishiji considered it a great opportunity. Those who want to reveal Maharishiji as the founder of a narrow sect, if they read this quote and this part of the sage's life carefully, their doubts will be removed.

At the end of December, Maharishi Dayanand ji reached Delhi, and camped at Anarbagh in Shermal. Munshi Indramani etc. friendly people stayed with Maharishiji. In those days Maharishi ji had completed Rigveda Dibhashyabhoomi and used to write Veda Bhashya. The work of preaching was done daily. The scholars of kings and emperors used to come to Maharishiji. Maharishiji had sent the information of his thoughts to almost all the kings. All of them people also had a desire to see the Mahatma, but the Brahmins used to stop them from behind. They used to mislead them and portrayed Maharishiji as an atheist and kept painting pictures of philosophical sins.The king of Indore had tried that all the kings should gather in a meeting and listen to the principles of Maharishiji. In Delhi, the kings could not being busy in this government programs, how could they have time to listen to sermons? Sometimes it was difficult because of the presence of Lat sahib, sometimes the inspection of the army, sometimes the procession, sometimes the theatre. That's why there could not be a gathering of kings. Maharishiji's idea was to bring some reform to the nobles of the country, at least to convey the sound of religion to their ears, but due to the misfortune of country and the result of the deeds of some nobles - the idea could not fructify.

Maharishiji's second goal in reaching the court was to collect and consult different religious leaders of the country and if possible, find such a great river in which all communal drains would be merged. All the reformers should try to speak in the same way, with the same voice, so that those who are reforming the subjects should not be seen fighting among themselves due to differences. On the invitation of Maharishi ji, Babu Keshavchandra Sen, Sir Syed Ahmad Khan, Munshi Kanhaiya lal Aldhari, Babu Navinchandra Rai, Munshi Indramani and Babu Harishchandra Chintamani etc. gathered at the place of Mahanubhav Swami ji. Babu Keshavchandra Sen was the shining star of the Brahmo Samaj at that time. The new law had not yet become famous, but the reins of the society were in their hands. The second representative of Brahmo Samaj was Babu Navinchandra Rai. Rai Mahasaya was the lifeblood of the Brahmo Samaj of Punjab. In the 19th century, Islam did not produce a more influential leader than Sir Syed. Sir Syed's strength was not of the sword - it was of the pen, tongue and intellect. He made the Muslims of India wake up from their sleep. Munshi Kanhaiyalal Aldhari was trying to reform and Munshi Indramani was gaining fame by resolving the objections made by Muslims on Hindu religion. Babu Harishchandra Chintamani was a famous Arya Samaji of Bombay at that time. In this way, that small gathering could be considered as representative. In this gathering there were representatives of Bengal, Bombay, United Provinces and Punjab and on the other hand representatives of Islam, Brahmo Samaj, Hindu Samaj and Arya Samaj were present. Maharishi ji presented his views in the meeting.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login www.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

पृष्ठ 2 का शेष

फिल्म इंडस्ट्री पर्दे के पीछे...

जिसने वास्तविक जीवन में उसके साथ यौन उत्पीड़न किया है। जस्टिस हेमा कमेटी की रिपोर्ट में यह भी खुलासा किया गया है। कि एक्ट्रेस को यह भी डर है कि मलयालम फिल्म इंडस्ट्री में चेंजिग रूम में भी कैमरे लगवाए जा रहे हैं ताकि लड़कियों को फंसाकर उनके साथ शारीरिक संबंध बनाए जाएं। इसके अलावा, उन्हें फिल्म ऑफर करने से पहले ही कहा जाता है कि फिल्म की शूटिग के दौरान कभी भी उनसे सेक्स की डिमांड की जा सकती है। अगर एक्ट्रेस किसी भी समय इससे इनकार करे तो फिल्म से उसे कभी भी निकाला जा सकता है।

रिपोर्ट में ये भी सामने आया है कि एक्ट्रेसेस को हर स्थिति में एडजस्टमेंट और समझौते करने के लिए कहा जाता है, चाहे वो फिल्म के ऑफर के दौरान हो या फिल्म की शूटिग के बाद। डर का ऐसा माहौल बना दिया गया है कि बिना परिवार के लोग सेट पर भी नहीं जा सकते। ना तो एक्ट्रेसेस को काम करने के लिए पैसे समय से दिए जा रहे हैं। लंबे-लंबे समय तक उनके पैसे रोके जा रहे हैं। इसके अलावा, एक्ट्रेसेस को ये भी बताया जाता है कि उन्हें कभी भी फिल्म यूनिट के किसी भी सदस्य से सेक्स की मांग का सामना करना पड़ सकता है और उन्हें हमेशा इसके लिए तैयार रहना होता है। रिपोर्ट के अनुसार, ये एक जाल है जिसमें शरीफ लड़कियों को फंसाया जाता है और बाद में उन्हें ब्लैकमेल किया जाता है। सबसे चिंताजनक बात ये है, कि इस पूरे मामले में इंडस्ट्री के बड़े-बड़े नाम शामिल हैं, जो महिलाओं के साथ इन घिनौनी हरकतों को अंजाम दे रहे हैं। सवाल यही है कि समाज को दिशा देने का दावा करने वाला यह संस्थान अपने अंदर कब झांकेगा। - **सम्पादक**

पृष्ठ 4 का शेष

शिक्षा का सही अर्थ है - राष्ट्र सेवा और ....

ईसाई मिशन को आगे बढ़ाने के लिए आया था, जिसने भारत में एप्पल की खेती सबसे पहले की, उस व्यक्ति ने जब सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा तो वह ईसाई बनाने के बजाय लोगों को वैदिक धर्मी बनाने लगा और उस व्यक्ति ने अपना नाम बदला और वह सत्यानंद स्टॉक्स के नाम से प्रसिद्ध हो गया। उसने अपने बच्चों का नाम बदला, अपनी पत्नी का नाम बदला और पूरी तरह से अपनी पहचान बदली, अपना काम बदला तो, यह कोई साधारण ग्रंथ नहीं है, इसने समाज में, दुनिया में बहुत बड़ी क्रांति की है। सत्यानंद स्टॉक्स ने अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी और उनको आजादी के संग्राम में डेढ़ वर्ष का करावास भी भोगना पड़ा। सत्यार्थ प्रकाश का दीवाना बनकर उसने इतना बड़ा काम किया। आज मैं आप सब के बीच सत्यार्थ प्रकाश को लेकर, आर्य समाज को लेकर मैंने अपने निश्चित विषय पर पूरी शक्ति के साथ सरल भाषा में आपको सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे और तीसरे समुल्लास की चर्चा की और आप सबसे में निवेदन करता हूं, कि सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने के लिए आप अपने मोबाइल एप्लीकेशन पर डाउनलोड करके अवश्य पढ़ें, आप इसे अवश्य सुनें। आपके जीवन में निश्चित ही एक बहुत बड़ा परिवर्तन करने वाला ग्रंथ सिद्ध होगा, इसके साथ ही मैं आप सबसे एक निवेदन यह भी करना चाहता हूं, कि आर्य समाज द्वारा आर्य प्रतिभा विकास संस्थान नाम की एक संस्था जो बच्चों को यूपीएससी की तैयारी कराती है, उसका 31 अगस्त को नॉमिनेशन फाइल करने की अंतिम डेट है, उसके माध्यम से आप जो आईएएस, आईपीएस बनना चाहते हैं, तो उनको दिल्ली में निशुल्क शिक्षा भी प्रदान की जाती है, आप अप्लाई करें इसके लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन एग्जाम होता है, साक्षात्कार होता है और तभी बच्चों का चयन होता है, इस अवसर पर मैं सभी आयोजकों को और प्रिंसिपल मैडम को, संस्कृत के विभाग अध्यक्ष का और सभी का आभार व्यक्त करता हूं और आप सभी को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं। धन्यवाद - ***सम्पादक***

पृष्ठ 5 का शेष

आर्यसमाज हनुमान रोड द्वारा वेद .....

सब के मन को मोहित कर दिया। 25 अगस्त को हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस पर आर्यसमाज के अमर बलिदानियों को याद करते हुए श्रद्धांजलि दी गई। उनके महान बलिदान को स्मरण किया गया। 26 अगस्त जन्माष्टमी को इस वेद प्रचार समारोह के समापन अवसर पर पूर्णाहुति में पांच यज्ञ कुंडों पर, एक दर्जन से अधिक यजमानों ने आहुति दी। इस अवसर पर डॉक्टर हरिदेव जी ने यज्ञ के महत्व और संदेशों को साइंटिफिक और आध्यात्मिक रूप से अत्यंत उपयोगी और लाभकारी बताया। इसके उपरांत वैदिक संस्कृति के संरक्षक योगीराज भगवान श्रीकृष्ण के जीवन पर आधारित भाषण प्रतियोगिता का डॉ. हरिदेव जी की अध्यक्षता में आयोजन किया गया। जिसमें 14 विद्यालयों के प्रतिभागी विद्यार्थियों ने भाग लिया, सभी प्रतिभागियों ने योगीराज भगवान श्रीकृष्ण के जीवन और उनके निष्काम कर्मों तथा गीता के उपदेशों का वर्णन करते हुए अत्यंत प्रेरक और मार्मिक संदेशों को प्रस्तुत किया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल द्वारा दिए गए निर्णय के आधार पर प्रथम कु॰ इशिका (रघुमल आर्य कन्या महाविद्यालय राजाबाजार नई दिल्ली), द्वितीय, कु॰ भव्या सहगल (शहीद राजपाल डीएवी पब्लिक स्कूल दयानंद विहार दिल्ली), तृतीय कु॰ सुनीता आर्य (आर्य कन्या गुरुकुल नरेला, दिल्ली) को प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार राशि एवं साहित्य आर्य समाज हनुमान रोड के अधिकारियों द्वारा प्रदान किया गया। सभी प्रतियोगियों को साहित्य और पुरस्कार प्रदान किए गए। अंत में आर्य समाज के प्रधान श्री नरेंद्र हुड्डा जी ने सबका आभार व्यक्त करते हुए, अपने सन्देश में कहा कि मैं आर्य समाज के सभी सदस्यों, कार्यकारिणी, ब्रह्मा जी, पुरोहित जी, पदाधिकारियों और उनके परिवार के सदस्यों, स्कूल के शिक्षकों, विद्यार्थियों, भाषण प्रतियोगिता के प्रतियोगियों, प्रिंसेज पार्क और आस-पास के क्षेत्रों से आए अन्य लोगों, अन्य आर्य समाजों के आर्यजनों के सहयोग और जिम्मेदारियों के कारण इस वर्ष के श्रावणी और जन्माष्टमी पर्व के सफल आयोजन के लिए बहुत आभारी हूँ। प्रेम प्रसन्नता के वातावरण में शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। -***संजय कुमार, मंत्री***

प्रथम पृष्ठ का शेष

2. उत्तर पत्र पूर्ण रूप से भरकर दिए गए कॉलम में अपना व विद्यालय का पूरा नाम व पता (पिन कोड सहित), फोन नम्बर, आयु, अवश्य भरें तथा पते के अन्त में राज्य का नाम अवश्य लिखें। (यदि विद्यालय के माध्यम से भाग न ले रहे हों तो सम्बन्धित संस्था का नाम अवश्य भरें। जैसे गुरुकुल, आर्य समाज, आर्यवीर दल की शाखा आदि।)

3. प्रश्नपत्र को भरकर 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001' के पते पर (प्रश्नोत्तरी को फोल्ड करके लिफाफे में) भेजें अथवा विद्यालय/संस्था की ओर से सभी प्रश्न उत्तर के साथ कॉमिक एकत्रित करके भी भेजे जा सकते हैं।

4. दिनांक 1 सितम्बर 2025 से पूर्व प्राप्त होने वाले उत्तर पत्र ही प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे। यह तिथि आगे बढ़ाने का अधिकार संयोजक का होगा।

5. उत्तर पत्रों की पूर्ण जांच के पश्चात् सभी ठीक उत्तर वाले पत्रों को पुरस्कार योजना में सम्मिलित किया जाएगा। पुरस्कार संयोजक समिति द्वारा बनाई गई तीन सदस्यीय निर्णायक समिति द्वारा अन्तिम रूप से घोषित किया जाएगा।

6. निर्णायकों की समिति का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा तथा उसे कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकेगी।

7. पुरस्कृत/विजेता बच्चों के नाम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **'साप्ताहिक आर्यसन्देश'** में दिए जायेंगे तथा पृथक पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा एवं बच्चों के नाम सभा की वेबसाइट **www.thearyasamaj.org** पर प्रदर्शित किये जायेंगे।

8. सभी पुरस्कार **'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2025'** में दिल्ली के अवसर पर प्रदान किए जायेंगे जिसकी सूचना विजेताओं को अग्रिम भेजी जाएगी। यह योजना हिन्दी तथा अन्य भाषाओं की कॉमिक पर समान रूप से लागू होगी।

9. इस कॉमिक को सुरक्षित रखें क्योकि प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार लेने हेतु कॉमिक की प्रति लाना / भेजना अनिवार्य होगा। - ***संयोजक***

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में सदस्यगण अपना शुल्क भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2014 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1500/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। आप अपना शुल्क सीधे निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करा सकते हैं- " Arya Sandesh Saptahik "

A/c No. 1098101002787 IFSC Code: CNRB0001098

Canara Bank, Parliament Street, New Delhi

कृपया शुल्क जमा कराने के उपरान्त डिपोजिट स्लिप/मैसेज का फोटो 9540040322 पर अवश्य भेजें- ***सम्पादक***

शोक समाचार

श्री सत्यदेव आर्य जी को मातृशोक

आर्यसमाज विकास नगर, उत्तम नगर दिल्ली के प्रधान श्री सत्यदेव आर्य जी की पूज्य माताजी श्रीमती सावित्री देवी जी का दिनांक 21 अगस्त, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ उनके गांव नैथला में किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 25 अगस्त, 2024 को उनके पैत्रक गांव नेथला, जिला बागपत (उत्तर-प्रदेश) में सम्पन्न हुई, जिसमें सभामन्त्री श्री सुखबीर सिंह आर्य जी सहित उनके निजी परिवार एवं निकटवर्ती आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 19 अगस्त, 2024 से रविवार 25 अगस्त, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 29-30-31/08/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 28, अगस्त, 2024

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ (रजि०)

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान

द्वारा

संघ लोक सेवा आयोग की

सिविल सेवा परीक्षा IAS / IPS / IRS etc..
की उत्तम तैयारी हेतु
आर्य प्रतिभा छात्रवृत्ति परीक्षा

ऑनलाइन परीक्षा दिनांक 15 सितंबर 2024, पूर्वाह्न 11:00 बजे

निःशुल्क

आज ही रजिस्टर करें

प्रमुख सुविधाएं

मार्गदर्शन | रहना | शिक्षण | खाना

इच्छुक उम्मीदवार ऑनलाइन आवेदन करने के लिए संपर्क करें ।

वेबसाइट : www.pratibhavikas.org

आवेदन की अंतिम तिथि – 8 सितम्बर 2024

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

आर्य परिवारों के विवाह योग्य सदस्यों के लिए
मनपसन्द जीवनसाथी खोजने की ऑनलाइन सुविधा

Arya Samaj Matrimony

matrimony.thearyasamaj.org 7428894012

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — सत्यार्थ प्रकाश — सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण
(अजिल्द) 23x36%16
मुद्रित मूल्य ₹ 80 प्रचारार्थ मूल्य ₹ 60

विशेष संस्करण
(सजिल्द) 23x36%16
मुद्रित मूल्य ₹120 प्रचारार्थ मूल्य ₹80

पॉकेट संस्करण
मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹50

विशिष्ट पॉकेट संस्करण
मुद्रित मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹ 100

स्थूलाक्षर
(सजिल्द) 20x30%8
मुद्रित मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹120

उपहार संस्करण
मुद्रित मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750

सत्यार्थ प्रकाश
अंग्रेजी अजिल्द
मुद्रित मूल्य ₹250 प्रचारार्थ मूल्य ₹160

सत्यार्थ प्रकाश
अंग्रेजी सजिल्द
मुद्रित मूल्य ₹300 प्रचारार्थ मूल्य ₹200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह